JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सलुम्बर की भित्ति चित्रकला

डॉ. लक्ष्मण लाल कुम्हार
सहायक आचार्य (इतिहास)
Guest Faculty
राजकीय महाविद्यालय, लसाड़िया,
उदयपुर (राज.)

भित्ति चित्रण की आदिम प्रवृत्ति है। प्रागैतिहासिक गुहाचित्र इसके साक्षी है। प्रागैतिहासिक काल की गुहाओं एवं चट्टानों पर चित्रित कलावशेष पर दृष्टिपात करने पर तत्कालीन मानव हृदय की चेष्टाओं उनकी कला अभिरुचियों एवं मौलिक प्रवृत्तियों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। भारत के प्रागैतिहासिक चित्रों के अवशेष मुख्यतः उत्तरप्रदेश के आजमगढ़, रायगढ़, चक्रधरपुर, होशंगाबाद, मिरजापुर इत्यादि की गुहाओं में उपलब्ध है।[1] इस काल के संस्कृति कला अवशेषों में सरहट, पंचगगढ़ी व बांदा के पाषाण खण्ड़ों पर लाल रंग पोत कर चित्रित कलावशेष उल्लेखनीय है। भारत के विभिन्न भागों में उपलब्ध आदिम कलावशेषों के विश्लेषण से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि आज के मानव की भांति ही आदि मानव भी सौन्दर्य एवं कला उपासक था। सौन्दर्य दर्शन की इसी उत्कृष्ट भावनाओं ने ही इस अमूर्तभावों को मूर्तरूप में अंकित करने के लिए प्रेरित किया होगा।[2]

राजस्थान में भी कोटा के मुकन्दरा पहाड़ियों, कन्यादह, बाजणीभाट, बेराठ एवं अरावली पर्वत शृंखलाओं में कुछ शैलचित्र मिले हैं। जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि राजस्थान में भी आदि मानवकला एवं सौन्दर्य की अनुभूतियों से प्रेरित था और इसी अनुभूतियों को चट्टानों व खुली भित्तियों पर अंकित कर उन्हें मूर्तरूप प्रदान करता था।[3]

अजन्ता ऐलोरा तथा बाघ गुहाओं के भित्ति चित्रों ने विश्व के अनेक कला मर्मज्ञों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। कालान्तर में राजस्थान की विभिन्न रियासतों में स्थित देव प्रसादों, राजप्रासादों, छतरियों दुर्गों, हवेलियों, आवासी भवनों इत्यादि में भित्ति चित्रों का विषय रामायण, महाभारत कृष्ण चरित्र के साथ-साथ शिकार, सवारी, दरबारी जीवन, राग-रागनियों, त्योंहार एवं रतिक्रिया प्रमुख है।[4]

डूँगरपुर राज्य के दक्षिण में स्थित मेवाड़ राज्य में पुरातात्विक अन्वेषणों में मेवाड़ की नई पुरानी शिलाओं पर उत्कीर्ण पूर्व पाषाणकालीन कतिपय चित्रात्मक आकारों को खोज निकाला गया है।[5] बागौर, आहड़, गिलूण्ड, बालाथल इत्यादि क्षेत्रों में हुए उत्खनन में इस क्षेत्र में चित्रांकन परम्परा के अन्तर्गत कई महत्त्वपूर्ण साक्ष्य उपलब्ध हुए है।[6] उत्खनन से प्राप्त लाल एवं काले मृदमाणों के अवशेषों के चित्रांकन एवं मानवकृतियों की लयबद्ध रेखाएँ और ज्योमितिकल अंकन के रूप में साक्ष्य सुरक्षित है, जिसमें लाखों वर्ष पूर्व प्रयुक्त ज्यामितिकल आकार में से इस अंचल की बौद्धिक जागृति का अनुमान लगाया जा सकता है। चित्तौड़ के निकट बेड़च व गंभीरी नदी के तट की चट्टानों में एक लाख वर्ष पुराने अवशेष मिले हैं, जो इस क्षेत्र की तत्कालीन मानव सभ्यता का बोध करती है। चित्तौड़गढ़ के ही मध्यमिका व नगरी से प्राप्त शिला अवशेषों में नर्तकी के पाव व बतख के चित्रों से गुप्तकालीन कला प्रभाव के साथ-साथ स्थानीय चित्रण की मौलिकता झलकती है। आहड़ उत्खनन से प्राप्त अवशेषों में भी मेवाड़ में अविरल चित्र पद्धति का बोध होता है। गुजरात के वल्लभी के विध्वंस के बाद यहाँ के आए हुए चित्रकारों व कलाकरों ने अजन्ता परम्परा को प्रधानता देना आरम्भ किया। यों तो उन पर स्थानीय चित्रकला का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसलिए यह प्रभाव 7वीं सदी से 15वीं सदी तक अबाधगति से पड़ता गया।[7]

अजन्ता परम्परा का सर्वप्रथम प्रभाव मेवाड़ में परिलक्षित हुआ। गुजरात से भी यहाँ कलाकार आए। यहाँ मौलिक प्राचीन चित्रशैली से मिलकर नवीनता सृजित की। इस शैली के चिन्ह मण्डोर द्वार के गोवर्धन धारण, बाड़ोली तथा नागदा मूर्तिकला में देखने को मिलते हैं। इस मौलिक शैली को हम जैन या अपभ्रंश या गुजराती शैली के नाम से जानते हैं। यह शैली अलग-अलग नामों से पुकारी जाती है। गुप्तकालीन सांस्कृतिक अवशेषों में डूँगरपुर के बिछीवाड़ा ग्राम से 10 कि.मी. दूरी पर स्थित आमझरा ग्राम महत्त्वपूर्ण है।[8]

सलूम्बर ठिकाने की भित्ति चित्रकला

सलूम्बर नगर के चित्रांकन अवशेषों को देखकर प्रतीत होता है कि यहाँ समृद्ध चित्रांकन परम्परा रही होगी, वर्तमान में तो केवल भित्तिचित्रों के अवशेष ही सुलभ हैं, जो गुजरते समय के साथ-साथ नष्ट एवं धूमिल होते जा रहे हैं, किन्तु इन्हें देखकर सलूम्बर चित्रांकन परम्परा को विवेचित किया जा सकता हैं। भित्तिचित्रों के केन्द्र में सबसे मनोरम चित्र पारलिया हवेली में निर्मित हैं, इसके अतिरिक्त नगरसेठ की हवेली, दोषी की, सेठों की व आगालों की हवेलियों के निजी आवासीय भवनों से लेकर राजप्रसादों में यथा जोधनिवास, जनाना, मर्दाना व कुंवरपदा महलों में भित्तिचित्र अंकित है जिनमें अधिकांशतः 'गोटाई फ्रेस्कों' पद्धति में निर्मित हैं। ये गोटाई चित्र निम्नांकित विशेषताएं लिए हुए हैं-

1. अलंकरण रहित सादे एवं सजीव चित्रांकन हुआ है,
2. रेखाओं के आधार पर बने चित्र कलाकार के भावों को प्रकट करते हैं,
3. रंगों में हड़मच, पीला, लाल, सिन्दूर, नीला व काले रंग का अधिक प्रयोग हुआ हैं।[9]

जोधनिवास सलुम्बर के भित्ति चित्र - सलूम्बर के प्राचीन महलों में बने चित्र काल की तीव्र गति के कारण प्रायः धूमिल एवं नष्ट हो चुके है फिर भी 1800 ई. में निर्मित जोध निवास में कुछ भित्ति चित्र मिले है जिनमें भगवान कृष्ण तन्वंगी मुद्रा में गायों के मध्य खड़े बांसुरी बजा रहे है। इसमें गायों का गतिपूर्ण अंकन दर्शनीय है। ऐसे ही एक स्थान पर लैला मजनूं की भावपूर्ण मुद्राओं का आकर्षण चित्रण है, मजनूं को कृषकाय अवस्था में चित्रित किया है। समीप ही पेड़ पर पिंजरे में तोता दिखाया है जिसमें भावात्मकता का पूट है। तीसरा चित्र चन्दवरदाई की वीर रस कविता से ओतप्रोत भाषाभिव्यक्ति "चार बांस चैबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण" के अनुरूप चित्रण मिलता है। इसमें पृथ्वीराज द्वारा मोहम्मद गौरी को निशाना बनाते चित्रित किया है। यह चित्र सलूम्बर के प्रासादों के गतिपूर्ण अंकन को दर्शाता है।[10]

वरदिया निवास के भित्ति चित्र - हुमडों की गली सलुम्बर में स्थित इस निवास के विक्रम संवत् 1922 (1865 ई.) में निर्मित भित्ति चित्र मिले है। ये चित्र इस भवन में ऊपरी मंजिल के एक कक्ष में टेम्परा पद्धति से किये है। इन चित्रों में शृंगारिक रतिभाव एवं अन्य सामाजिक रीति रिवाजों तथ ढोला मारू के कथानक का आकर्षक चित्रण चित्रण किया गया है। जो उक्त चित्र के अनुरूप यहाँ का एक प्रिय विषय जान पड़ता है।[11]

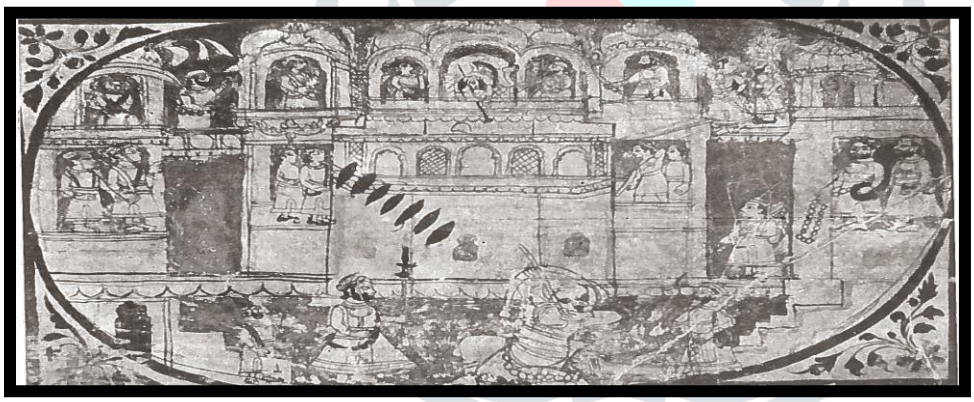

पृथ्वीराज चैहान एवं मोहम्मद गौरी 1865 ई. लगभग बरदिया निवास, सलूम्बर

शम्भूलालजी दोषी निवास -सेठी गली सलूम्बर में स्थित इस निवास के ऊपर दूसरी मंजिल में कई महत्वपूर्ण चित्रों का चित्रण है जिनमें माधवानलकामकन्दला, पृथ्वीराज की वीरगाथाओं तथा महाराणा प्रताप के युद्ध चित्र मिले है। इन चित्रों में तत्कालीन वेशभूषा में जोशपूर्ण मानवाकृतियों को लाल रंग की पृष्ठभूमि में उभारा गया है।

गोवर्धन धारण, 1875 ई. लगभग, शम्भूलालजी दोषी निवास, सलूम्बर

यहीं पर भक्ति भावनाओं से ओतप्रोत भगवान कृष्ण को गोवर्धन पर्वत लिये खड़े चित्रित किया है तथा उनके आसपास नर-नारी एवं विभिन्न प्राणियों को उस पर्वत के नीचे सुरक्षित खड़े दिखाया है। सभी मानवाकृतियाँ पर्वत के नीचे लकड़ियाँ टिकाये भावपूर्ण मुद्रा में चित्रित है। सलूम्बर के ये सभी भित्तिचित्र यहाँ की स्थानीय परम्परा को दर्शाते हैं।[12]

भित्तिचित्रों की विषय वस्तु: सलुम्बर ठिकाने के संदर्भ में

विषय वस्तु की दृष्टि से पौराणिक लीलाएँ चित्रकला का मुख्य आधार हैं, पारलिया की हवेली में ऊपरी कक्ष के वितान पर श्रीकृष्ण की रासलीला का बड़ा मनोहारी चित्रांकन दृष्टव्य हैं। पौराणिक लीलाओं के चित्रांकन परम्परा में नगरसेठ की हवेली के ऊपरी कक्ष में बने चित्रों में रामायण आख्यानों में राम-लक्ष्मण-सीता का सोने के मृग को मारने का, साधुवेश में रावण के आगमन, गरूड़ की सवारी पर विष्णु-लक्ष्मी का चित्रण, अर्जुन के सारथी रूप में कृष्ण, पाण्डव भीम द्वारा वृक्ष उखाड़ने के चित्र, विष्णु का समुद्र में लक्ष्मी द्वारा पैर दबाने का, गोवर्द्धन धारी कृष्ण, नरसिंह अवतार, ब्रह्मा, मीरा, अम्बा आदि देवियां, शिव-पार्वती, हनुमान-जामवंत, सूर्य और उसके सात घोड़े, सात सूंड वाले एरावत हाथी पर बिराजमान इन्द्र इत्यादि चित्रित हैं।[13]

आध्यात्म एवं धर्म प्रधान चित्रांकन के अलावा शृंगार रस प्रधान विषय वस्तु भी चित्रों में दृष्टव्य है यथा-स्त्री शृंगार, शयन और दासी सेवा, स्त्री नग्न रूप में, ढोला-मारू मूमल, दासी द्वारा मदिरा पान, सेवक द्वारा रानी के पांव के कांटा निकालना, फूंदी लेती स्त्रियां, वीणा बजाती स्त्री जिसकी तान से सम्मोहित हो पशु पक्षी आदि के चित्र हैं।[14]

राजसिक प्रवृतियों की विषय वस्तु के अन्तर्गत यथा सवारी, शिकार, राज दरबार इत्यादि चित्रों में सलूम्बर रावत की दशहरे की सवारी का दृश्य दृष्टव्य हैं, जिसमें हाथी पर आसीन रावत के साथ उसके पीछे घोड़ों पर बैठे जागीरदारों का दल हैं। वाद्य नगाड़े बजाने वालों का दल इत्यादि चित्रित हैं। इसी तरह अन्य चित्र रावत की गणगौर व होली के अवसर पर निकलने वाली सवारी के चित्रण में तत्कालीन समाज संस्कृति को रेखांकित करते है। शिकार के चित्रण में हाथियों की लड़ाई, बाघ-हिरन, कुत्ते का शिकार, सूअर का शिकार, मल्लयुद्ध आदि दृश्यों का चित्रांकन हुआ हैं।[15]

इसके अतिरिक्त काल्पनिक विषय भी चित्रण का आधार रहे हैं जैसे शरीर बाघ का, सिर हाथी का पंखयुक्त चित्र दृष्टव्य हैं। संभोग युगल के चित्र भी चित्रण का विषय बने हैं। बेल-बूटे, पुष्पदल इत्यादि चित्रों में हाथी, घोड़े, गाय आदि प्राकृतिक चित्रण भी विषय वस्तु की आधार सामग्री बना हैं।[16]

उपरोक्त भित्तिचित्रों की विषय वस्तु के विवेचन से स्पष्ट होता है कि सलूम्बर की चित्रकला आध्यात्मिक एवं धर्म प्रधान रही है। चित्रकला का भारतीय दृष्टिकोण भी आध्यात्मिक ही रहा हैं। भारतीय चित्रकला का 'यथार्थ प्रतिबम्बिन' आदर्श को यथार्थ का सहारा देकर सभी की समझ के लिए उसके सार्वलौकिक स्वरूप को उभारने की प्रक्रिया है। यही कारण है कि पौराणिक आख्यानों, महाकाव्यों के घटना चक्रों एवं सनातन धर्म के अवतारों की लीलाएं चित्रकला की मुख्य विषय वस्तु के रूप में उभर कर आती हैं। शृंगार, राजसी प्रवृतियां, प्राकृतिक चित्रण गौण रूप में दृष्टिगोचर हैं।[17]

मेवाड़ क्षेत्र में प्राप्त उक्त भित्ति चित्रावशेषों में गोटाई के भित्ति गोटीजींकी से प्लास्टर करके गीली परत पर स्फूर्त रेखांकन से बने है। इनको देखते हुए अजन्ता के भित्ति चित्रों की परत बहुत पतली है। जबकि मेवाड़ में गोटाई में फ्रेस्को-बोनों, आला गीला पद्धति में मोटे प्लास्टर पर चित्र अंकित है तथा सुखी दीवार के भित्ति चित्र प्रायः पतली परत वाले फ्रेस्को-सेको टेम्परा पद्धति में बने है। उदयपुर में पीपलीया की हवेली, राज महल के कृष्ण विलास तथा सलूम्बर के वरदिया निवास में देखे

गये भित्ति चित्रों में यही टेम्परा लघु चित्र पद्धति है। आज भी मेवाड़ में विभिन्न पर्वों पर ऐसे भित्ति चित्र सर्वत्र बनते बिगडते दिखाई देते है। मेवाड़ में यह कला की प्राचीन धरोहर असंख्य स्थानों में अंकित है पर यहाँ उनमे से चयनित कुछ विशेष स्थलों की विषय वस्तु का उल्लेख मात्र ही कला परम्परा की दृष्टि से उपयुक्त माना है।[18]

इस प्रकार हम देखते है कि मेवाड के शिलात्कीर्ण चित्रों, लकडी की पट्टलिकाओं, ताड़ पत्रों एवं कागज पर बने चित्रों की परम्परा में समानता है। शाहपुरा के भित्ति चित्रों में पट्ट चित्रों की पद्धति स्पष्ट दिखाई देती है। मेवाड़ में प्रायः सभी ठिकानों, मन्दिरों एवं राज प्रासादों में भित्ति चित्र निर्मित हुये है। यहाँ प्रत्येक ठिकाने की बैठक में सतह से ढाई फिट की ऊँचाई तक के भाग में इजारा अंकित करवाने की एक प्राचीन परम्परा रही है जिसे विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं राजसी ठाट-बाट से प्रभावित होकर सुसज्जित कराने की एक मौलिक सूझ-बूझ यहाँ के चित्रकारों एवं शासकों में रही है, जो भित्ति चित्र फलकों में दृष्टव्य है।[19]

भित्ति-चित्र हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है जो सामाजिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक थाती की ऐतिहासिक गाथा अपने आप में समेटे हुए है। मेवाड़ का कलात्मक वैभव संरक्षण चाहता है। यदि इसे बचाने का प्रयास नहीं किया गया तो इस कला के केवल स्मृतियाँ ही शेष रहा जाएगी।

संदर्भ -

1. वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 71
2. वही, पृ. 72
3. श्रीराम पाण्डेय, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 81
4. जयसिंह नीरज, राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्णकाव्य, पृ. 11
5. दशरथ शर्मा, राजस्थान थ्रू द एजेज, पृ. 30-31
6. राजशेखर व्यास, मेवाड़ की कला एवं स्थापत्य कला, पृ. 107-108
7. के. एस. गुप्ता, जे. के. ओझा, राजस्थान का राजनैतिक एवं संस्कृतिक इतिहास, पृ. 72
8. लक्ष्मणलाल कुम्हार, मेवाड़ की प्रमुख हस्तकलाएँ, (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध), एम.फील, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर 2010,
   पृ. 37
9. विमला भण्डारी, सलूम्बर का इतिहास, पृ. 432-433
10. आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृ. 49
11. वही, पृ. 50
12. वही, पृ. 50
13. विमला भण्डारी, सलूम्बर का इतिहास, पृ. 433
14. वही, पृ. 433
15. वही, पृ. 433-434
16. वही, पृ. 434
17. वही, पृ. 434
18. ई. बी. हेवेल, द आर्ट हेरिटेज ऑफ इण्डिया, पृ. 3 ; ग्रिफित, जे. अजन्ता वोल्युम, पृ. 18 ; रा. अ. अग्रवाल, मारवाड़ मुराल, पृ. 61-69 ; आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृ. 50
19. आर. के. वशिष्ठ, मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, पृ. 50